अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । शुक्रवार, 4 जनवरी 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

मेरा मानना है कि भ्रष्टाचार की हमारी समस्या का समाधान पारदर्शिता है...
-ग्रेस पोइ

फिलीपींस की उद्यमी

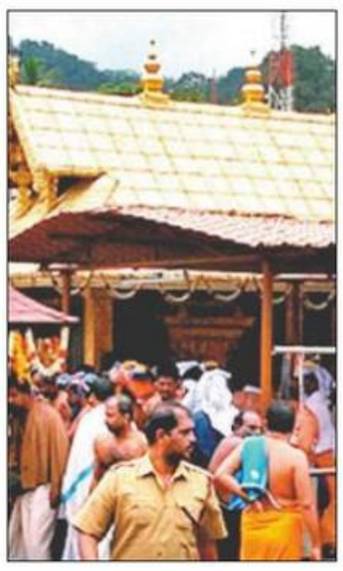

सबरीमाला मंदिर में दो महिलाओं के प्रवेश के बाद जो हिंसा भड़की है, उसका अंदेशा पहले से था, इसलिए राज्य सरकार को एहतियात बरतना चाहिए था। चूंकि 22 जनवरी को इस मामले में अगली सुनवाई है, लिहाजा सबको संयम से काम लेना चाहिए।

आस्था और सियासत

सबरीमाला मंदिर में सभी उम्र की महिलाओं को प्रवेश की इजाजत देने वाले सुप्रीम कोर्ट के फैसले के करीब तीन महीने बाद पुलिस सुरक्षा में पहली बार दो महिलाओं के दर्शन करने के बाद जिस तरह से हिंसा भड़की है, उसका अंदेशा पहले से था। बिंदू और कनकदुर्गा नामक इन दो महिलाओं के मंदिर में प्रवेश करने की खबर आने के बाद वहां सियासी टकराव तेज हो गया, जिसमें पहले पत्थरबाजी में भाजपा के एक कार्यकर्ता की मौत हो गई और फिर बृहस्पतिवार को सबरीमाला कर्म समिति की हड़ताल के दौरान हुई चाकूबाजी की घटना में एक और भाजपा कार्यकर्ता के मारे जाने की खबर है। दूसरी ओर प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर देसी बमों से हमले किए हैं और माकपा के कार्यालयों में तोड़फोड़ की है। ये ब्योरे केरल के सियासी हालात को समझने के लिए काफी हैं, जहां दशकों से आरएसएस और माकपा के बीच टकराव में अनेक लोगों की मौत हो चुकी है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद से मंदिर प्रबंधन और हिंदूवादी संगठन ही नहीं, भाजपा और कांग्रेस जैसे सियासी दल भी आस्था के आधार पर इसका विरोध कर रहे हैं। दूसरी ओर राज्य की माकपा गठबंधन सरकार भी मंदिर जाने की इच्छुक महिलाओं को पुलिस सुरक्षा में मंदिर में प्रवेश करवाने का प्रयास करती रही है। ऐसा लगता है कि दोनों पक्षों के लिए यह आस्था या सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अमल से, कहीं अधिक सियासी वर्चस्व और प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर आस्था का सवाल कितना बड़ा हो गया है, यह इससे समझा जा सकता है कि इन दो महिलाओं के प्रवेश के बाद मंदिर में 'शुद्धीकरण' का अनुष्ठान तक किया गया। निश्चित रूप से सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अमल की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है, लेकिन चूंकि कानून व्यवस्था की भी जिम्मेदारी उसकी है, तो उसे पूरा एहतियात बरतना चाहिए था, ताकि हिंसा न भड़के। इन दो महिलाओं ने मंदिर में प्रतीकात्मक ढंग से प्रवेश जरूर कर लिया है, लेकिन इसे कोई बड़ा सामाजिक सुधार नहीं माना जा सकता; यह तब होगा, जब इसे सभी पक्ष सहजता से स्वीकार करें। चूंकि इस मामले में पुनर्विचार याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं, जिन पर 22 जनवरी को सुनवाई है, लिहाजा सभी पक्षों को अभी संयम से काम लेना चाहिए।

एक दलीय शासन की ओर पाकिस्तान?

सत्तारूढ़ पीटीआई ने मुख्य विपक्षी पार्टियों को साफ कर दिया है और इमरान ने चुनाव कराने की बात कही है, ताकि दो तिहाई बहुमत पा सकें। पर जनता एक दलीय शासन की मंशा को सफल नहीं होने देगी।

मरिआना बाबर, पाकिस्तानी पत्रकार

पाकिस्तान क्या एक दलीय शासन की तरफ बढ़ रहा है? घटनाएं यहां बड़ी तेजी से बदल रही हैं। सरसरी नजर डालें, तो साफ दिखता है कि बड़ी पार्टियों के नेताओं को या तो सलाखों के पीछे डाल दिया गया है, या उन्हें नजरबंद किया गया है या उनकी गिरफ्तारी की तैयारी दिखती है। जियाउल हक द्वारा थोपे गए मार्शल लॉ के अंधेरे दिनों के बाद पाकिस्तान के राजनीतिक क्षितिज पर दो बड़ी पार्टियां उभरीं। पहली, पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) और दूसरी पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज (पीएमएल-एन)।

तीसरी बड़ी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए इंसाफ (पीटीआई) है, जो इन दिनों सत्ता में है। लेकिन इसे संसद में मामूली बहुमत हासिल है। यह महज छह सीटों के बहुमत से सत्ता चला रही है। जिस तरह से घटनाएं सामने आ रही हैं, उससे ऐसी व्यवस्था बनाने के बारे में पता लगता है, जिसमें दोनों विपक्षी पार्टियों-पीपीपी और पीएमएल-एन को, धीरे-धीरे ही सही, लेकिन निश्चित रूप से सियासत से बाहर किया जा रहा है।

ऐसा मालूम होता है कि सरकार बड़ी हड़बड़ी में है। लेकिन विपक्षी नेताओं को सियासत से हटाने के लिए इस तरह की सियासी इंजीनियरिंग भारी अस्थिरता ही पैदा करेगी। जवाबदेही निष्पक्ष होनी चाहिए और कानून की उचित प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए।

पीएमएल-एन के नेता नवाज शरीफ पहले से ही भ्रष्टाचार के मामले में सात साल जेल की सजा काट रहे हैं। कुछ महीने पहले जब नवाज शरीफ को पार्टी का नेतृत्व करने से अयोग्य करार दिया गया, तब उनके छोटे भाई शहबाज शरीफ ने पार्टी की कमान संभाली, लेकिन वह भी फिलहाल नेशनल एकाउंटिबिलिटी ब्यूरो की हिरासत में हैं, क्योंकि उन पर भी भ्रष्टाचार का आरोप है और उनके मामले की जांच चल रही है। नवाज शरीफ अकेले पाकिस्तानी राजनेता हैं, जो तीन बार प्रधानमंत्री चुने गए। दोनों भाई फिलहाल लाहौर की कोट लखपत जेल में सलाखों के पीछे हैं। पहले माना जाता था कि नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज शरीफ पार्टी की कमान संभालेंगी, लेकिन भ्रष्टाचार के मामले में जेल से जमानत पर बाहर होने के बाद से वह चुप हैं। जब तक अपने खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले में जीत नहीं जातीं, ऐसा नहीं लगता कि वह पार्टी का नेतृत्व करने के लिए सार्वजनिक रूप से सामने आएंगी।

उधर पीपीपी के मुखिया आसिफ अली जरदारी के खिलाफ अदालत में गंभीर मामले चल रहे हैं। वह और उनकी बहन फरयाल तालपुर भ्रष्टाचार के अनगिनत मामलों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में कोई यह सोच सकता है कि बेनजीर भुट्टो के बेटे बिलावल भुट्टो पार्टी का नेतृत्व कर सकते हैं। पर आसिफ अली जरदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के ताजा मामलों में बिलावल भुट्टो का नाम भी है। यह लगभग वैसा ही है, जैसे दो प्रमुख विपक्षी दलों को सियासत से हटाने की योजना हो, ताकि कोई नेता जेल से बाहर न रहे।

पाकिस्तानी भ्रष्टाचार के सख्त खिलाफ हैं, और यह दिलचस्प है कि इन दोनों राजनीतिक दलों के प्रमुखों के खिलाफ आरोप तय किए जा चुके हैं या उन्हें पहले ही दोषी ठहराया जा चुका है, लेकिन सड़कों पर कोई आंदोलन नहीं है। इसका पहला कारण तो यह है कि कोई नेता ऐसा नहीं बचा है, जो पार्टी कार्यकर्ताओं को आंदोलन के लिए प्रेरित कर सके, और दूसरा कारण यह है कि इन नेताओं के लिए जनता कोई सहानुभूति महसूस नहीं कर रही। सवाल यह है कि क्या ये पार्टियां अपने कार्यकर्ताओं को प्रेरित करने में सक्षम होंगी।

वंशवादी राजनीति की वजह से पीटीआई को छोड़कर कोई भी पार्टी उभरने में सक्षम नहीं है। मुख्यधारा की दोनों पार्टियों-पीपीपी और पीएमएल-एन ने अपने कार्यकर्ताओं को आगे नहीं बढ़ने दिया और पार्टी को सख्ती से पारिवारिक सदस्यों के दायरे में ही रखा। पीटीआई ने कई अवसरों पर कहा कि नवाज शरीफ और आसिफ अली जरदारी का राजनीतिक जीवन पूरी तरह से खत्म हो गया है और वे फिर कभी चुनाव नहीं लड़ सकते।

सिंध विधानसभा में पहले से ही पीटीआई की पहल पर फॉरवर्ड ब्लॉक नाम से गठबंधन बनाने का दबाव है, क्योंकि पीपीपी के मुख्यमंत्री को भी शीघ्र ही भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना करना पड़ेगा। यह एक खतरनाक स्थिति है, क्योंकि पीटीआई अपने सहयोगी दलों के साथ सिंध विधानसभा में पीपीपी सरकार को हटा सकती है। इस तरह से केंद्र, खैबर पख्तुनख्वा और पंजाब में पीटीआई की सरकार हो जाएगी।

इस नए वर्ष 2019 में पाकिस्तान में बड़े बदलाव हो सकते हैं। इसी महीने के मध्य में पाकिस्तान के प्रधान न्यायाधीश अपना कार्यकाल पूरा कर लेंगे। उन्होंने सेना और पीटीआई का खुलकर समर्थन किया, उनके कई फैसले विवादास्पद रहे और उन पर न्यायिक सक्रियता का आरोप भी लगा।

इस वर्ष सेना प्रमुख जनरल बाजवा भी अपने पद से हट जाएंगे। लेकिन सेना में बड़े बदलाव की उम्मीद नहीं है, क्योंकि सेना हमेशा सांस्थानिक नीतियों के अनुसार चलती है, किसी जनरल के अनुसार नहीं। कभी-कभी कोई नया प्रमुख कुछ नए विचारों की तलाश करता है और हो सकता है कि नए प्रधान न्यायाधीश और नए सेना प्रमुख की प्राथमिकताएं अलग-अलग हों।

बेशक कोई कितनी भी कोशिश करे, लेकिन पाकिस्तान में एक दलीय शासन थोपना मुश्किल होगा। यह राजनीतिक विविधताओं वाला मुल्क है। पिछले 71 वर्ष के इतिहास में दशकों तक चली तानाशाही भी विभिन्न राजनीतिक पार्टियों को खत्म नहीं कर सकी और जैसे ही मार्शल लॉ हटाया गया, दर्जनों राजनीतिक पार्टियां सामने आईं। इमरान खान ने हाल ही में मीडिया को बताया कि नए सिरे से चुनाव कराने की संभावना है। इसने पूरे मुल्क को हैरान कर दिया, क्योंकि किसी भी पदासीन प्रधानमंत्री ने सरकार गठन के एक साल पूरा होने से पहले चुनाव में जाने की बात नहीं की है। क्या इमरान खान यह सोचते हैं कि मुख्य विपक्षी पार्टियों के नेताओं के संकट में होने पर वह चुनाव में दो तिहाई बहुमत हासिल कर लेंगे और केंद्रीकृत शासन करेंगे? पाक सत्ता प्रतिष्ठान चाहे जितनी भी कोशिश कर ले, एक दलीय शासन का बड़े पैमाने पर विरोध होगा।

अंतर्ध्वनि

>> एम. एफ. हुसेन

यदि जीना नहीं सीखा, तो आप कुछ नहीं कर सकते

मुझे याद है, जब मैं आठवीं में था, तभी मैंने अपने पिताजी को कहा कि मुझे पढ़ना नहीं है, पेंटिंग करनी है। फिल्मों का मुझे तभी से आब्सेशन है। घर वाले परेशान हुए कि यह क्या सोचा है। उस जमाने में किसी आर्टिस्ट की क्या हैसियत होती थी? ऐसे आदमी के साथ कौन अपनी लड़की ब्याहेगा, इसकी चिंता थी। मगर मेरे पिता को संगीत और कला का शौक था। मैं जो करता रहता था, वह उन्हें अच्छा लगता था। उन्होंने इजाजत दे दी। मान सकते हैं कि वह एक छलांग थी। हरदम पेंटिंग करता रहता था। जब ग्यारह साल का हुआ, तो वह मुझे एक कॉलेज में ले गए। वहां जो अंतिम बरस के छात्र थे, जो चार-पांच साल पेंटिंग सीखने में लगा चुके थे, मैंने कहा कि मैं उनसे बढ़िया चित्र बना सकता हूं। उन्होंने कहा, बनाओ, और मैंने बना दिया। लेकिन मैंने उनसे कहा कि मुझे कोई डिग्री नहीं चाहिए। मुझे नौकरी नहीं करनी है। सिर्फ पेंटिंग करनी है। मेरे हाथ में ब्रश है, कुछ नहीं होगा तो दीवारें पेंट करके पेट भर लूंगा...। दुनिया में जितना कुछ है-विज्ञान, संगीत, नृत्य, तकनीकी, व्यापार, उस सबका निचोड़ है कला... और वैसे दस हजार साल तक आप सरोद बजाते रहिए, तब भी कुछ होने वाला नहीं है। जो जीवन के बारे में सोचता है और उसे किसी रूप में अभिव्यक्त करता है, वही कलाकार है। रियाज वहां किसी सुर का नहीं, जीवन का होता है। बाकी सब तो टैक्नीक है। कहते हैं न कि वह किसी चीज का मोहताज नहीं, जिसको जीने का हुनर आता है। आप यदि जीना नहीं सीखे हैं, तो कुछ भी नहीं कर सकते हैं। चित्रकारी का तार आपके दिमाग से जुड़ा होता है। इसके अंदर बड़ी गहराइयां होती हैं, संगीत की तरह। कला की जरूरत हर चीज में होती है। माचिस की तिल्ली बनाने के लिए भी हुनर चाहिए।

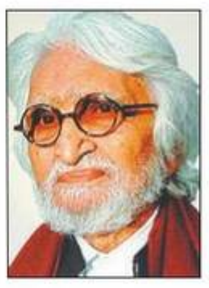

-दिवंगत भारतीय चित्रकार

मंजिलें और भी हैं

>>हरकीरत सिंह अहलूवालिया

नई सोच से खेती को फायदे का सौदा बनाया

मैं पंजाब में होशियारपुर जिले के चौनी गांव का रहने वाला हूं। खेती हमारा पुश्तैनी पेशा है। लेकिन मेरे दौर में खेती ज्यादातर गलत वजहों से ही जानी जाती है। पंजाब खेती में बहुत विकसित माना जाता रहा है। लेकिन यहां भी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। मेरे कई दोस्तों ने घाटे का सौदा बताकर खेती छोड़ दी है। लेकिन मैं हार मानने वालों में से नहीं हूं। मैंने सोचा कि क्यों न खेती को मुनाफे का सौदा बनाया जाए। कुछ ऐसा किया जाए, जिससे लोग खेती छोड़ें नहीं, बल्कि खेती के प्रति उत्साहित हों। चूंकि मैं पंजाब यूनिवर्सिटी से मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएट हूं, इसलिए भी मैंने कुछ अलग करने का फैसला किया। मेरे दादा और पिता किन्नू, माल्टा और संतरे की खेती करते थे। लेकिन अब इस खेती में बरकत नहीं थी। अध्ययन करने पर मैंने पाया कि मौसम में आए बदलाव और मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होने का साइट्रस फलों की खेती पर प्रतिकूल असर पड़ता है। इसीलिए फलों का उत्पादन लगातार गिर रहा था। मैंने मिट्टी की गुणवत्ता बेहतर करने की दिशा में काम किया और पुराने पेड़ हटाकर नए पौधे लगाए। लेकिन इसमें फल आने में कम से कम पांच साल का समय लगता। संयोग से 2004 में किसी काम से ऑस्ट्रेलिया गया और वहां एक किसान परिवार के साथ ठहरा। उन्होंने खेतों के बीच शानदार हट बनाए थे, जो तमाम सुविधाओं से लैस थे। मैं उनसे बेहद प्रभावित हुआ, तो उस दंपति ने मुझे भी इस तरह के हट बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

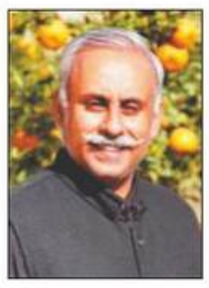

मैंने खेती के साथ-साथ फार्म हाउस बनाकर पर्यटन भी शुरू किया है।

वहां से लौटकर अपने गांव आने, अपने परिवार के लोगों और साथियों से इस बारे में बात करने और इस संबंध में बहुत सारा शोध करने के बाद वर्ष 2006 में मैंने अपने खेत में होम स्टे की बाकायदा शुरुआत की। मैंने वहां फार्म हाउस बनवाया और उसे आधुनिक सुविधाओं से लैस किया। इसे मैंने साइट्रस काउंटी नाम दिया। मैंने वहां खेती भी जारी रखी। शुरुआत में फार्म हाउस में रहने के लिए लोगों को होशियारपुर बुलाना ही एक बड़ी चुनौती था। फार्म हाउस की बात करते ही लोग बड़े शहरों के फार्म हाउसों के बारे में सोचते हैं। लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि खेतों के बीच बने फार्म हाउस में तमाम तरह की सुविधाएं हो सकती हैं। बहुत सारे लोग, जिनमें कुछ मेरे नजदीकी भी थे, मुझे लगातार यह बताते रहे कि अपने यहां, और वह भी होशियारपुर जैसी जगह में एग्रो टूरिज्म के बारे में सोचने का बहुत फायदा नहीं है। लेकिन मैं इससे हतोत्साहित नहीं हुआ। धीरे-धीरे आसपास के लोगों ने मेरे फार्म हाउस में दिलचस्पी लेनी शुरू की। हालांकि इस बीच मेरी आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी, इसके बावजूद अपने दूसरे साथियों की तरह मैंने खेत नहीं बेचे। आज विदेशों से भी पर्यटक मेरे फार्म हाउस में आते हैं और खेतों के बीच रहने का आनंद उठाने के साथ फल उत्पादन से जुड़ी नवीतनम तकनीकों की भी जानकारी हासिल करते हैं। फार्म हाउस की रसोई में मेरे खेत में उपजे अनाज और सब्जियों का ही इस्तेमाल किया जाता है। सप्ताहांत में अमूमन कुछ परिवार अपने बच्चों के साथ यहां समय बिताने आते हैं। मैं उन बच्चों को खेत पर ले जाता हूं और उन्हें खेती के बारे में बताता हूं। मेरी इस पहल ने आसपास के अनेक किसानों को प्रभावित किया है। मैं अपने साथी किसानों को यह बताना चाहता हूं कि इस विपरीत हालात में खेती छोड़ देना समाधान नहीं है, बल्कि कुछ नया करके खेती को लाभ का सौदा बनाया जा सकता है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

सांसद विकास निधि पर सवाल

16वीं लोकसभा के अब तक के कार्यकाल में 545 में से केवल 35 लोकसभा क्षेत्रों में ही सांसद निधि का इस्तेमाल कर स्वीकृत परियोजनाएं पूरी की गई हैं। यानी करीब पांच वर्षों के दौरान 25 करोड़ रुपये खर्च करने वाले केवल 35 लोकसभा सांसद हैं।

सांसद निधि के इस्तेमाल संबंधी ताजा रिपोर्ट पहली नजर में निराश करती है। केंद्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने जो आंकड़ा जारी किया है, उसके अनुसार, वर्ष 2014 से अब तक यानी 16 वीं लोकसभा के अब तक के कार्यकाल में 545 में से केवल 35 लोकसभा क्षेत्रों में ही सांसद निधि का इस्तेमाल कर स्वीकृत परियोजनाएं पूरी की गई हैं। यानी करीब पांच वर्षों के दौरान 25 करोड़ रुपये खर्च करने वाले केवल 35 लोकसभा सांसद हैं। इनमें सबसे ज्यादा पश्चिम बंगाल के 10 सांसद हैं। उसके बाद उत्तर प्रदेश में छह, मध्य प्रदेश में चार, पंजाब में तीन, असम, गुजरात एवं हरियाणा में दो-दो, राजस्थान, अरुणाचल, मणिपुर, बिहार, नगालैंड और छत्तीसगढ़ में एक-एक सांसदों को पूरी निधि निर्गत की गई है।

दरअसल, सांसद क्षेत्रीय विकास योजना या सांसद निधि की नियमावली के अनुसार, प्रत्येक वर्ष की राशि ढाई-ढाई करोड़ की किस्तों में दो बार निर्गत होती है। यदि आपने एक किस्त का काम पूरा कर उसका उपयोग प्रमाण पत्र जमा करा दिया, तभी दूसरी किस्त जारी होती है। इसी में विलंब होता है और दूसरी किस्त जारी नहीं होती। 19 दिसंबर को लोकसभा में इस पर बयान देते हुए केंद्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री डीवी सदानंद गौड़ा ने कहा कि कई कारणों से जिला प्रशासन द्वारा उपयोग प्रमाण पत्र जमा करने में देरी होती है। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार प्रत्येक साल एक बार में ही पूरी राशि जारी करने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है।

योजना के तहत सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में स्थानीय लोगों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ सामुदायिक संपदा के निर्माण की सिफारिश करते हैं। इसके तहत वे पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सड़क इत्यादि का निर्माण कराते हैं।

अवधेश कुमार

अगर आप सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना की वेबसाइट देखें, तो पता चलेगा कि चार सितंबर तक किसी भी लोकसभा सदस्य को वित्त वर्ष 2018-19 का सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास निधि योजना का धन आवंटित नहीं हुआ है। इस वित्त वर्ष में सांसद विकास निधि की कुल 2,920 किस्तें रुकी हुई हैं। 2.5 करोड़ रुपये की एक किस्त से 2,920 को गुणा कर दें, तो यह 7,300 करोड़ रुपये होती है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि 14वीं और 15वीं लोकसभा तथा राज्यसभा को मिलाकर 1,156 सांसदों के कामकाज का खाता अभी तक बंद नहीं हुआ है। जाहिर है, या तो काम समय पर खत्म नहीं हुआ और यदि हो गया, तो उसका उपयोग प्रमाण पत्र तथा ऑडिट प्रमाण पत्र सही तरीके से विभाग को मिला नहीं है।

नरेंद्र मोदी सरकार ने सांसद निधि से कराए कामों की समीक्षा और जानकारी मोबाइल ऐप के जरिये देने की व्यवस्था शुरू की है। अपेक्षा यह है कि सांसद अपने काम के वीडियो और फोटोग्राफ अपलोड करेंगे, जिससे किस्तों में कोई रुकावट न आए। इसका उद्देश्य पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित करना भी है। निस्संदेह, इस योजना में भ्रष्टाचार सहित कई प्रकार की अनियमितताएं आदि की शिकायतें और कहीं-कहीं इनके प्रमाण भी सामने आते हैं। किंतु ये बातें लगभग हर योजना के साथ है। इनको दूर करने के उपाय किए जा रहे हैं।

यह आलोचना स्वीकार नहीं की जा सकती कि सांसद निधि का सारा धन व्यर्थ चला जाता है। 1993-94 से लेकर अगस्त 2017 तक इसके लिए 44,929.17 करोड़ रुपये के 18,82,180 कार्यों और योजनाओं को मंजूरी दी गई है। इनमें से 75 प्रतिशत कार्यों के पूरे होने की भी बात है। भारत जैसे देश में सांसद के क्षेत्र को देखते हुए पांच करोड़ की राशि अत्यंत ही छोटी है। किसी प्रमाण पत्र के अभाव में इसे रोके रखना उचित नहीं होगा।

हरियाली और रास्ता

निशांत, छोटा बच्चा और लिली

एक ऐसे बच्चे की कहानी, जिसने अपनी तरह के एक कमजोर पिल्ले को अपने साथी के तौर पर चुना।

निशांत अकेला था। एक दिन कहीं से एक नन्ही-सी कुतिया उसके घर आ गई। धीरे-धीरे वह निशांत से घुल-मिल गई। निशांत ने उसका नाम लिली रखा। निशांत कठोर स्वभाव का था, पर लिली के साथ रहते-रहते वह संवेदनशील और शांत होता जा रहा था। लिली उसके बच्चे जैसी थी। कुछ ही साल में लिली ने पांच बच्चे दिए। निशांत ने कई लोगों से उन बच्चों के बारे में बात की, पर कोई जवाब नहीं आया। उसने तय किया कि वह पोस्टर चिपका देगा। उसने एक पिल्ले का दाम पांच हजार रुपये रखा। निशांत अपने दरवाजे पर पोस्टर लगा रहा था तो देखा कि एक बच्चा उसके पीछे था। बच्चे ने कहा, अंकल, मुझे भी एक पिल्ला चाहिए। मेरा कोई दोस्त नहीं है। मैं उसके साथ खेलूंगा। निशांत ने पूछा, एक पिल्ला पांच हजार रुपये का है, आपके पास इतने पैसे हैं? बच्चा अपने हाथों में एक थैली पकड़े था, जिसमें मिट्टी की गुल्लक थी। उस गुल्लक को बाहर निकालते हुए वह बोला, मेरे पास यह गुल्लक है। इसमें जितने भी पैसे हैं, आप ले लो। निशांत मुस्कराते हुए बच्चे की तरफ देखने लगा और फिर आवाज लगाई, लिली। घर के अंदर से लिली दौड़ती हुई आई। उसके पीछे-पीछे पिल्ले भी भागते आ रहे थे। निशांत बच्चे से बोला, चुन लो, तुम्हें कौन-सा चाहिए। बच्चे ने देखा, सबसे पीछे एक छोटा-सा पिल्ला लुढ़कते हुए आ रहा था। उसका एक पैर थोड़ा कमजोर था, इसलिए वह भाग नहीं पा रहा था। बच्चे ने निशांत से कहा, मुझे वह वाला चाहिए। निशांत बोला, पर उसका पैर थोड़ा कमजोर है। आप कोई और ले लो। वह बच्चा धीरे से झुका और अपनी पैंट को हाथ से ऊपर करने लगा। निशांत ने देखा, उसके दोनों पैरों में लोहे की रॉड लगी थी। वह बोला, अंकल मैं भी दौड़ नहीं पाता हूं। हम दोनों एक दूसरे को समझ सकेंगे।

दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें सच्चे साथी की जरूरत होती है।

खुली खिड़की

कानून में सख्ती का फायदा

शराब/मादक पदार्थ के सेवन के कारण सड़क दुर्घटनाएं

नए वर्ष के मौके पर विभिन्न नगरों में शराब पीकर वाहन चलाने के आरोप में बड़ी संख्या में लोगों को हिरासत में लिया गया। शराब पीकर गाड़ी चलाना हमारे देश में कानूनन अपराध है, पिछले कुछ वर्षों में इस कानून के अमल में सख्ती बरतने का फायदा भी होता दिख रहा है।

संगत का फल

सत्संग

एक पेड़ पर एक कौआ और एक तोता रहते थे। एक बार उन्हें पता चला कि सागर तट पर गरुड़ भगवान पधार रहे हैं। सभी पक्षी दर्शन करने वहां जाने लगे। दोनों ने सोचा, क्यों न हम सबसे पहले जाकर गरुड़ भगवान के दर्शन कर लें। सवेरे दोनों ने उड़ान भरी। वे जल्दी ही सभी पक्षियों से आगे निकल गए। अचानक उड़ते-उड़ते कौए की नजर एक व्यक्ति पर पड़ी, जो सिर पर दही का मटका लिए बाजार जा रहा था। कौआ उड़ते-उड़ते उस मटके पर बैठ गया और अपनी चोंच में दही भरकर उड़ गया। उसके मुंह में दही का स्वाद लग चुका था। अब वह हर बार उड़कर मटके पर बैठ जाता और अपनी चोंच में दही भरकर उड़ जाता। तोते ने कौए को ऐसा करने से रोका, पर कौआ नहीं माना। किसान को कौए की चोरी का पता चल गया। थोड़ी देर तक उसने कौए को पकड़ने की कोशिश की, पर नाकाम रहने पर उसने कौए को सबक सिखाने का मन बनाया। उसने मटके को रास्ते में रख दिया और एक पेड़ के पीछे छिप गया। कौए को जब मटके के आसपास कोई नहीं दिखा, तो वह फिर चोंच में दही भरकर पेड़ की डाल पर बैठकर खाने लगा। किसान ने कौए को निशाना बनाकर पत्थर फेंका। पर कौआ होशियार था। किसान के पत्थर फेंकते ही वह उड़ गया। पत्थर सीधे तोते को लगा और उसकी मृत्यु हो गई। कौए के साथ रहने का दंड उसे इस तरह भुगतना पड़ा।

-संकलित